नईदुनिया

संपादकीय

आईआईटी की चमक में खोता जीवन

साहिल वाकोडे की मौत को केवल परीक्षा में मोबाइल पकड़े जाने, चैटजीपीटी के इस्तेमाल या कथित अनुशासनात्मक दबाव से जोड़कर देखना आसान होगा, लेकिन यही इस त्रासदी को समझने की सबसे बड़ी भूल भी होगी। आईआईटी बॉम्बे में हुई इस घटना ने देश के सबसे प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थानों की उस तस्वीर पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं, जिसके एक हिस्से में उत्कृष्टता, उपलब्धि और सफलता की चमक है तो दूसरे हिस्से में तनाव, अकेलापन और असफल होने का भय।

साहिल की मौत के बाद उसके पिता ने प्रोफेसर पर जातिसूचक टिप्पणियों और तीन महीने तक प्रताड़ित करने के आरोप लगाए हैं। इन्हीं आरोपों के आधार पर पुलिस ने आत्महत्या के लिए उकसाने और एससी-एसटी अधिनियम की धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। दूसरी ओर, आईआईटी बॉम्बे ने जातिगत भेदभाव के आरोपों से इनकार किया है और कहा है कि साहिल की ओर से ऐसी कोई शिकायत संस्थान के एससी-एसटी प्रकोष्ठ या प्रशासन को नहीं मिली थी। इसलिए इन आरोपों का सच जांच पूरी होने के बाद ही सामने आएगा।

संस्थान के अनुसार, परीक्षा में मोबाइल फोन के इस्तेमाल के बाद साहिल से शिक्षक और विभागाध्यक्ष ने बात की थी तथा उसे आश्वस्त किया गया था कि उसके अकादमिक भविष्य पर इसका असर नहीं पड़ेगा। इसके बावजूद कुछ घंटों बाद उसकी मृत्यु हो गई। चार सौ से अधिक छात्रों का विरोध प्रदर्शन और उसके बाद मिड-सेमेस्टर परीक्षाओं का स्थगित होना बताता है कि कैंपस के भीतर बेचैनी कितनी गहरी है।

बड़ा सवाल है कि क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था प्रतिभा को निखारने के साथ विद्यार्थी को भावनात्मक रूप से संभाल भी रही है? आईआईटी जैसे संस्थानों में प्रवेश स्वयं एक कठिन प्रतिस्पर्धा के बाद मिलता है। इसके बाद अंक, ग्रेड, शोध, इंटर्नशिप, प्लेसमेंट और भविष्य की चिंता लगातार दबाव बनाते हैं। हालिया रिपोर्टों में पिछले वर्षों में आईआईटी परिसरों में आत्महत्याओं और अन्य अप्राकृतिक मौतों की चिंताजनक संख्या सामने आई है।

आईआईटी बॉम्बे में स्टूडेंट वेलनेस सेंटर, व्यक्तिगत काउंसलिंग, समूह सहायता और चौबीसों घंटे संकट सहायता जैसी व्यवस्थाएं मौजूद हैं। लेकिन केवल सुविधा उपलब्ध करा देना पर्याप्त नहीं है। जरूरत ऐसी संस्कृति की है, जिसमें विद्यार्थी संकट आने के बाद नहीं, संकेत दिखाई देते ही सही समय सुना भी जाए।

साहिल की मौत का दोषी कौन है, यह जांच तय करेगी। लेकिन इस घटना से एक सवाल पूरे उच्च शिक्षा तंत्र के सामने खड़ा हो गया है - हम ऐसे विद्यार्थी तो बना रहे हैं जो कठिन परीक्षा पास कर सकें, लेकिन क्या हम उन्हें जीवन की कठिन परीक्षा के लिए भी तैयार कर रहे हैं? उत्कृष्टता का अर्थ केवल ऊंचे अंक और संस्थान नहीं हो सकता। किसी भी शिक्षा व्यवस्था की पहली कसौटी यह होनी चाहिए कि उसका विद्यार्थी सफलता की दौड़ में अपना जीवन न हार बैठे।

इसके साथ ही संस्थानों को शिकायतों की निष्पक्ष सुनवाई, शिक्षकों के व्यवहार की जवाबदेही और विद्यार्थियों के लिए भरोसेमंद संवाद व्यवस्था को मजबूत करना होगा। डर और चुप्पी किसी भी परिसर को सुरक्षित नहीं बना सकते।

आजकल

तस्वीर का दूसरा पहलू

सोशल मीडिया पर कोई नया चलन शुरू हो और देखते ही देखते लाखों लोग उसका हिस्सा बन जाएँ, अब यह सामान्य बात है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता ने इस रफ्तार को और बढ़ा दिया है। अस्सी के दशक का रूप हो या किसी पुराने दौर की कल्पना, कुछ शब्द लिखिए और कुछ ही क्षणों में अपनी बदली हुई तस्वीर सामने है। यह तकनीक मनोरंजन और रचनात्मकता के लिए आकर्षक जरूर है, लेकिन इसके पीछे छिपे सवाल कहीं अधिक गंभीर हैं।

हम एआई को तस्वीर देते समय अक्सर यह भूल जाते हैं कि तस्वीर केवल एक तस्वीर नहीं है। उसमें हमारा चेहरा, पहचान और कई बार ऐसी व्यक्तिगत सूचनाएँ होती हैं, जिनका भविष्य में अलग-अलग तरीकों से इस्तेमाल संभव है। सबसे महत्वपूर्ण सवाल यह है कि अपलोड की गई तस्वीर कहाँ जाती है, कितने समय तक सुरक्षित रहती है, उसका इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाता है और क्या उसे हटाने का अधिकार उपयोगकर्ता के पास है?

दूसरी चिंता डीपफेक की है। किसी व्यक्ति के चेहरे को किसी दूसरे चित्र या वीडियो पर इतनी वास्तविकता से लगाया जा सकता है कि असली और नकली में अंतर करना कठिन हो जाए। इसका इस्तेमाल धोखाधड़ी, बदनाम करने या झूठी सूचना फैलाने में हो सकता है। इसलिए आने वाले समय में केवल तस्वीर देख लेना उसकी सत्यता की गारंटी नहीं होगा।

भारत में व्यक्तिगत डिजिटल डेटा की सुरक्षा के लिए कानूनी ढांचा मौजूद है, लेकिन कानून से अधिक जरूरी नागरिकों की डिजिटल समझ है। किसी भी एआई एप पर तस्वीर डालने से पहले उसकी गोपनीयता नीति पढ़ना, अनावश्यक अनुमति से बचना और संवेदनशील तस्वीरें साझा न करना अब सावधानी नहीं, डिजिटल नागरिकता का अनिवार्य हिस्सा है। तकनीक का आनंद लीजिए, लेकिन अपनी पहचान की कीमत पर नहीं।

पाकिस्तान में बारूद की आंधी और चीन के सपने पर लगती चोट

पाकिस्तान इन दिनों अपने ही बनाए जाल में फंसता दिख रहा है। खैबर पख्तूनख्वा से लेकर बलूचिस्तान तक हर रोज कोई न कोई बड़ा हमला हो रहा है। तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान, जिसे टीटीपी कहते हैं, और बलूच लिबरेशन आर्मी, जिसे बीएलए कहते हैं, दोनों संगठन एक साथ सक्रिय हो गए हैं। पहले टीटीपी केवल सेना को निशाना बनाता था, अब बीएलए चीनी नागरिकों और चीनी परियोजनाओं को निशाना बना रहा है। पिछले कुछ महीनों में दर्जनों आत्मघाती हमले हुए हैं। सुरक्षा चौकियों पर हमले, स्कूलों पर हमले और ग्वादर पोर्ट के पास काफिले पर हमले। इससे पाकिस्तान की सेना की साख भी गिरी है और आम पाकिस्तानी में डर भी बढ़ा है। पाकिस्तान ने दशकों तक आतंक को अपनी विदेश नीति का हथियार बनाया था। अब वही हथियार उसी पर पलटवार कर रहा है। अफगानिस्तान में तालिबान की वापसी के बाद टीटीपी को खुली पनाह मिली है, हथियार मिले हैं और ट्रेनिंग भी मिली है। बलूचिस्तान में अलगाव की भावना पहले से थी, पर अब उसमें चीन के खिलाफ गुस्सा भी जुड़ गया है। बलूच लोग मानते हैं कि उनके संसाधन लूटे जा रहे हैं और बदले में उन्हें नौकरी तक नहीं मिल रही है। इसलिए वे चीनी इंजीनियरों को निशाना बना रहे हैं।

चीन और पाकिस्तान की दोस्ती की सबसे बड़ी निशानी है चीन-पाकिस्तान इकोनॉमिक कॉरिडोर, जिसे सीपेक कहते हैं। यह करीब 62 अरब डॉलर का प्रोजेक्ट है। ग्वादर पोर्ट से लेकर काशगर तक सड़क, रेल और ऊर्जा परियोजनाएं। चीन इसे अपनी बेल्ट एंड रोड योजना का दिल मानता है। पर पिछले एक साल में इस प्रोजेक्ट पर पांच बड़े हमले हुए हैं। कराची यूनिवर्सिटी में चीनी शिक्षकों पर हमला, ग्वादर में चीनी काफिले पर आत्मघाती हमला और दासू डैम पर इंजीनियरों की बस पर हमला। इन हमलों में दर्जनों चीनी नागरिक मारे गए हैं। चीन अब खुलकर नाराजगी जता रहा है। बीजिंग ने इस्लामाबाद से कहा है कि यदि सुरक्षा नहीं दे सकते तो हम अपनी निजी सुरक्षा भेजेंगे। यह पाकिस्तान की संप्रभुता पर सीधा सवाल है।

सीपेक की रफ्तार अब धीमी हो गई है। कई ऊर्जा प्रोजेक्ट अधूरे हैं। ग्वादर पोर्ट पर काम रुक-सा गया

है। चीनी कंपनियां अब पाकिस्तान में नया निवेश करने से डर रही हैं। पहले सुरक्षा दो, फिर पैसा लगेगा। पर पाकिस्तान की सेना खुद ही कई मोर्चों पर उलझी है। वह चीनी नागरिकों को भी नहीं बचा पा रही। चीन के पास पाकिस्तान से निकलने का आसान रास्ता नहीं है। उसने बहुत पैसा लगा दिया है। यदि वह पीछे हटता है तो उसकी पूरी बेल्ट एंड रोड योजना पर सवाल उठेगा। दुनिया कहेगी कि चीन अपने दोस्त को भी सुरक्षित नहीं रख पाया और यदि वह रहता है तो हर महीने लाशें गिननी पड़ेंगी। चीन की रणनीति में पाकिस्तान एक अहम कड़ी है, भारत को घेरने के लिए और अरब सागर तक सीधा रास्ता पाने के लिए। पर बलूचिस्तान में जमीन पर विरोध इतना तेज है कि सड़क बनाना भी युद्ध जैसा हो गया है। चीनी मजदूर अब बंकर में रहते हैं और बिना सेना के काफिले के बाहर नहीं निकलते। यह विकास नहीं है, यह सैन्य कब्जे जैसा दिखता है।

पाकिस्तान में आतंक का बढ़ना केवल दक्षिण एशिया की समस्या नहीं है। यह विश्व स्तर पर असर डाल रहा है। निवेश पर जब परमाणु हथियार वाला देश अस्थिर होता है तो पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था डरती है। आईएमएफ पहले ही पाकिस्तान को कर्ज देने में हिचक रहा है और अब चीन भी हाथ खींच रहा है तो पाकिस्तान दिवालिया होने की कगार पर है।

आतंक के निर्यात पर जब टीटीपी मजबूत होता है तो उसका असर अफगानिस्तान और मध्य एशिया तक जाता है और जब बीएलए मजबूत होता है तो ईरान तक तनाव बढ़ता है। अमेरिका पहले ही कह चुका है कि पाकिस्तान आतंक का एपिसेंटर है। अब चीन भी वही भाषा बोलने लगा है। यह बड़ा बदलाव है। बेल्ट एंड रोड पर यदि सीपेक फेल होता है तो चीन की पूरी योजना फेल मानी जाएगी। श्रीलंका में पहले ही हंबनटोटा का अनुभव खराब रहा। अब पाकिस्तान में भी वही कहानी दोहराई जा रही है। दुनिया के छोटे देश अब चीन से कर्ज लेने से पहले सौ बार सोचेंगे।

भारत के लिए इसमें दो सबक हैं। आतंक को पालना आखिर में खुद को ही खाता है और दूसरा यह कि बलूचिस्तान में जो हो रहा है, वह मानवाधिकार का मुद्दा भी है। भारत को चाहिए कि वह विश्व मंच पर बलूच लोगों की आवाज को शांति से उठाए और साथ ही अपनी सीमा पर सुरक्षा और मजबूत करे, क्योंकि जब पाकिस्तान अंदर से टूटता है तो वह बाहर हमला करने की कोशिश करता है।

पाकिस्तान को अब तय करना होगा कि उसे बंदूक चाहिए या रोटी। यदि वह आज भी आतंकी संगठनों में फर्क करता रहा कि यह अच्छा आतंकी है और यह बुरा आतंकी है, तो यह आग और फैलेगी। उसे अपने ही लोगों, बलूच और पश्तूनों को बातचीत से जोड़ना होगा। और चीन को भी समझना होगा कि पैसा फेंकने से दिल नहीं जीते जाते। चीन के लिए भी यह परीक्षा है। क्या वह केवल पैसा लगाएगा या लोगों का विकास भी करेगा? यदि ग्वादर के मछुआरों को ही रोजगार नहीं मिलेगा तो वे बंदरगाह को जलाएंगे ही। विकास बंदूक के साये में नहीं होता, विकास भरोसे में होता है। बारूद पर बना कॉरिडोर ज्यादा दिन नहीं चलता।

पाकिस्तान में हुए हमले बता रहे हैं कि नक्शे पर लकीर खींचना आसान है, पर जमीन पर उसे बनाना मुश्किल है। जब तक स्थानीय लोगों का भरोसा नहीं होगा, तब तक कोई भी प्रोजेक्ट, चाहे वह 62 अरब डॉलर का ही क्यों न हो, सुरक्षित नहीं रहेगा। सीपेक आज इसी मोड़ पर खड़ा है। एक तरफ चीन का पैसा है, दूसरी तरफ बलूच का गुस्सा और टीटीपी की गोली और बीच में फंसा है पाकिस्तान, जो खुद नहीं जानता कि वह किस तरफ जाए।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

सत्रह साल में सबसे सूखा मानसून और खेत की फटी छाती

देश में इस बार मानसून ने इतिहास के एक पुराने पन्ने को फिर खोल दिया है। नई दिल्ली से आई मौसम विभाग की रिपोर्ट कहती है कि देश में इस बार दक्षिण-पश्चिमी मानसून 2009 के बाद सबसे कमजोर रहा है। लगातार सत्रह साल में सबसे कम बारिश का रिकॉर्ड दर्ज हुआ है। एक जून से अठारह सितंबर तक देश में कुल सामान्य औसत बारिश 812.1 मिमी है, पर इस साल केवल 691.9 मिमी बारिश हुई है, यानी सामान्य से 15 प्रतिशत कम। यह कमी केवल आंकड़ा नहीं है। यह खेत में खड़ी धान की सूखी कोंपल है, यह बांध में घटा जलस्तर है और यह किसान की आंख में आया आंसू है। मौसम विभाग के अनुसार अब तक कुल हुई बारिश सामान्य से 15 प्रतिशत कम रही है। अल नीनो के बीच मानसूनी बारिश प्रभावित रही है और औसत का आंकड़ा भी घटकर रह गया है। सत्रह साल में सबसे कमजोर रहने की स्थिति में है। 2009 में देश में मानसून सामान्य से करीब 23 प्रतिशत कम रहा था और उसे बड़े पैमाने के मानसूनी सूखे के रूप में दर्ज किया गया था। इस साल अब तक की 15 प्रतिशत कमी उस स्तर के करीब है। हालांकि मानसून का अंतिम आकलन 30 सितंबर के बाद होगा, पर अभी तक की तस्वीर डराने वाली है।

देश की तस्वीर यदि जिलों के हिसाब से देखें तो चिंता और बढ़ जाती है। देश में 346 जिले ऐसे हैं, जहां बारिश सामान्य से बहुत कम हुई है। इन जिलों में खेतों में दरारें पड़ गई हैं, तालाब सूख गए हैं और बुवाई अधूरी रह गई है। प्रभावित राज्यों में राजस्थान सबसे आगे है, जहां बारिश में 22 प्रतिशत कमी दर्ज हुई है। मध्यप्रदेश में 7 प्रतिशत, छत्तीसगढ़ में 5 प्रतिशत, गुजरात में 8 प्रतिशत और कर्नाटक में 30 प्रतिशत की कमी है। यह कमी केवल खरीफ की फसल तक सीमित नहीं है। इसका असर आने वाले रबी सीजन पर भी पड़ेगा, क्योंकि बांधों में पानी नहीं होगा और भूजल स्तर नीचे चला जाएगा। खरीफ उत्पादन घटने की आशंका अब केवल आशंका नहीं रही, यह बाजार में दिखने लगी है। दालों और मोटे अनाज के दाम बढ़ने लगे हैं और सरकार को आयात पर विचार करना पड़ रहा है। एक तरफ देश के बड़े हिस्से में सूखा है, दूसरी

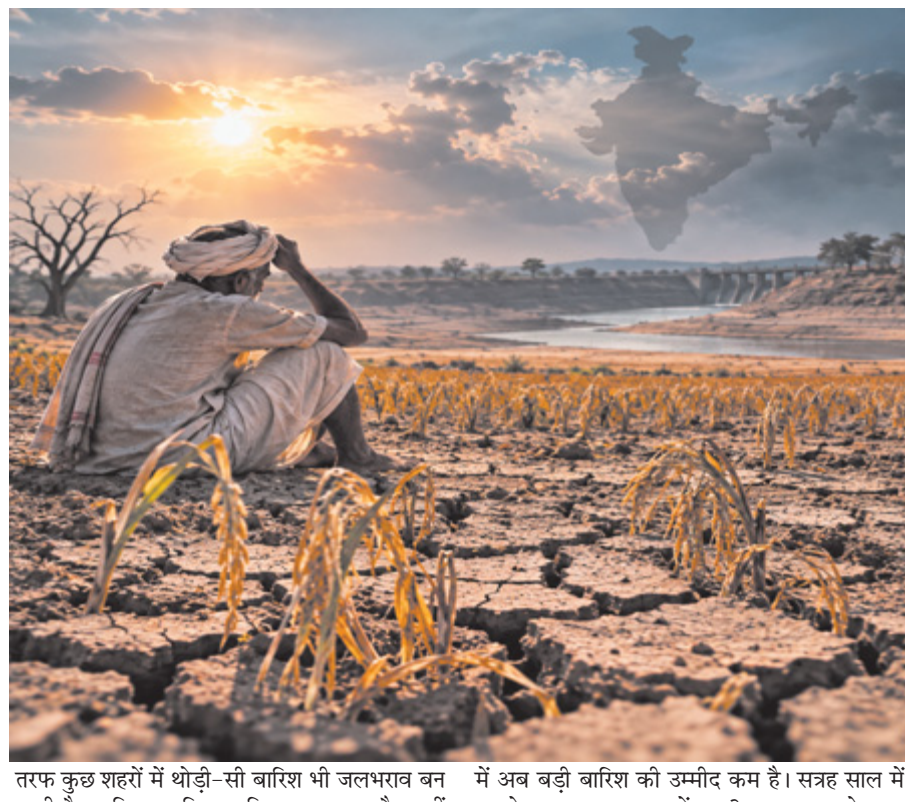

तरफ कुछ शहरों में थोड़ी-सी बारिश भी जलभराव बन जाती है। बारिश का वितरण कितना असमान है। कहीं बाढ़ है, कहीं सूखा है और यही असमानता इस साल के मानसून की सबसे बड़ी पहचान बन गई है। मौसम विभाग कह रहा है कि अब मानसून अपने अंतिम दौर में पहुंच गया है। मौसम विभाग के अनुसार 19 सितंबर से पश्चिमी राजस्थान के कुछ हिस्सों से मानसून की वापसी शुरू हो गई है। सामान्य तौर पर पश्चिमी राजस्थान से वापसी 17 सितंबर के आसपास शुरू होती है, पर इस बार वापसी की प्रक्रिया थोड़ी तेज है। हालांकि वापसी का मतलब पूरे देश में बारिश का तत्काल खत्म होना नहीं है। दक्षिण और पूर्वी भारत में अभी भी बारिश हो सकती है, पर उत्तर और मध्य भारत में अब बड़ी बारिश की उम्मीद कम है। सत्रह साल में सबसे सूखा मानसून क्यों रहा? इसका सबसे बड़ा कारण अल नीनो को माना जा रहा है। प्रशांत महासागर में पानी गर्म होने से भारत में मानसूनी हवाएं कमजोर पड़ जाती हैं। इस बार भी अल नीनो सक्रिय रहा और उसने मानसून को आगे नहीं बढ़ने दिया। जुलाई में जो बारिश होनी थी, वह नहीं हुई। अगस्त में जो सक्रियता होनी थी, वह टूट गई। अल नीनो का असर दो से तीन साल में एक बार होता है, पर अब जलवायु परिवर्तन के कारण यह असर हर साल दिखने लगा है। समुद्र गर्म हो रहा है और मानसून की दिशा बदल रही है। कभी वह बहुत तेज बरसता है तो कभी बिल्कुल नहीं रसता। यह अति ही अब सामान्य बनती जा रही है।

जब मानसून कमजोर हो तो किसान क्या करे और सरकार क्या करे? किसान के लिए सबसे जरूरी है फसल का बदलाव। यदि बारिश कम है तो धान की जगह मोटा अनाज बोया जाए। ज्वार, बाजरा और रागी जैसी फसलें कम पानी में भी हो जाती हैं और उनका बाजार भी अब बढ़ रहा है। सरकार ने श्री अन्न योजना शुरू की है, पर वह अभी कागज पर ज्यादा है, खेत पर कम। सरकार के लिए सबसे जरूरी है पानी का प्रबंधन। हर खेत में तालाब, हर गांव में चेकडैम और हर जिले में जल बजट। यदि बारिश का पानी रोक लिया जाए तो सूखे का असर आधा हो जाता है। महाराष्ट्र के कई जिलों में ऐसा प्रयोग सफल भी हुआ है, जहां गांव ने मिलकर पानी रोका और सूखे से लड़ाई जीती।

आज भी फसल बीमा का पैसा समय पर नहीं मिलता। कागज इतने मांगे जाते हैं कि किसान थक जाता है। यदि 346 जिलों में सूखा है तो वहां बीमा का आकलन सैटेलाइट से होना चाहिए, न कि पटवारी की रिपोर्ट से। सूखा केवल खेत का नहीं, अर्थव्यवस्था का भी है। जब खरीफ उत्पादन घटता है तो केवल किसान गरीब नहीं होता, पूरा देश महंगाई की चपेट में आता है। आटा, दाल, तेल सब महंगा होता है और महंगाई बढ़ने से ब्याज दरें बढ़ती हैं तो उद्योग भी प्रभावित होता है।

2026 का मानसून इसलिए याद रखा जाएगा, क्योंकि इसने हमें फिर याद दिलाया कि हम आज भी बादलों के भरोसे हैं। हमने चांद पर यान भेज दिया, पर बारिश का सटीक अनुमान आज भी नहीं लगा पाते। बादल से ज्यादा जमीन पर ध्यान देना होगा। सत्रह साल में सबसे सूखा मानसून एक चेतावनी है। यह कह रहा है कि जलवायु बदल रही है और हमें भी बदलना होगा। मानसून की वापसी तो हर साल होती है, पर यदि हमने पानी की वापसी नहीं रोकी तो अगला सूखा और बड़ा होगा। हम मानसून को केवल मौसम न मानें, उसे अर्थव्यवस्था का पहला बजट मानें और उसी के अनुसार अपनी खेती, अपनी नीति और अपनी आदतें बदलें। तभी 346 जिलों की यह चिंता अगले साल 100 जिलों तक सिमट सकेगी।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

84 महादेव दर्शन यात्रा

अभयेश्वर महादेव 84 महादेव की 48 वीं कड़ी

जब ब्रह्मा-विष्णु भी बचने दौड़े, महाकाल वन में शिव ने दी अभय की शक्ति

डॉ. नवीन आनंद जोशी

उज्जैन का वह शिवलिंग जहाँ स्वयं सृष्टिकर्ता को मिला अभयदान- अभयेश्वर महादेव की अनसुनी गाथा भय से मुक्ति चाहिए तो जानिये कैसे ब्रह्मा-विष्णु ने भी मांगी थी अभयेश्वर महादेव से शरण अभयेश्वर महादेव, जहाँ ब्रह्मा जी और विष्णु जी को भी मिला था भय से मुक्ति का वरदान

सृष्टि के आदि से लेकर अंत तक, समय का चक्र अपने निर्धारित नियमों से चलता रहा है। किंतु एक समय ऐसा भी आया जब स्वयं सृष्टिकर्ता ब्रह्मा जी के मन में एक गहन चिंता ने जन्म लिया। उन्हें आभास हुआ कि प्रत्येक कल्प के समापन पर चंद्रमा और सूर्य, जो सृष्टि के संचालन के मूल आधार हैं, भी अंततः नष्ट हो जाएँगे। इस विचार मात्र से ब्रह्मा जी का हृदय व्याकुल हो उठा। यदि प्रकाश के ये दोनों नेत्र ही न रहे, तो नवीन सृष्टि की स्थापना किस विधि से संभव होगी?

इसी चिंता में डूबे ब्रह्मा जी के नेत्रों से अश्रुधारा प्रवाहित हुई, और उन आंसुओं से दो भयंकर दैत्यों, हारव और कालकेलि, का प्राकट्य हुआ। दैत्यत्व के स्वभाव के अनुरूप, उत्पत्ति के तुरंत पश्चात ही उनकी दृष्टि अपने ही जन्मदाता ब्रह्मा जी पर पड़ी, और वे उन्हें ही समाप्त करने के उद्देश्य से उनकी ओर दौड़ पड़े। भय से आतंकित होकर पितामह ब्रह्मा जी वहाँ से पलायन कर गए।

भागते हुए ब्रह्मा जी को समुद्र के मध्य एक दिव्य प्रकाशपुंज दिखाई दिया। उस तेजस्वी पुरुष से जब उन्होंने परिचय पूछा, तो ज्ञात हुआ कि यह स्वयं सृष्टि के पालनकर्ता भगवान विष्णु हैं। ब्रह्मा जी ने अत्यंत

विनम्रता से उनसे उन दोनों दैत्यों से रक्षा की प्रार्थना की। किंतु नियति ऐसी थी कि वे दुष्ट दैत्य विष्णु जी को भी अपना लक्ष्य बनाकर उनकी ओर दौड़ पड़े। स्थिति की भयावहता को देखकर ब्रह्मा जी और विष्णु जी, दोनों ही सृष्टि के अधिष्ठाता देव, समुद्र में जा छिपे ऐसे संकटपूर्ण क्षण में एक आकाशवाणी हुई, जिसमें ब्रह्मा जी को महाकाल वन में, नूपुरेश्वर के दक्षिण दिशा में स्थापित पवित्र शिवलिंग के पूजन का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। यह संकेत पाकर ब्रह्मा जी और विष्णु जी दोनों उस पावन स्थल पर पहुँचे और अत्यंत श्रद्धा एवं भक्तिभाव से शिवलिंग की आराधना करने लगे।

भक्ति की इस पराकाष्ठा से भगवान शिव प्रसन्न हुए और उन्होंने साक्षात दर्शन देकर दोनों देवताओं के भय का कारण पूछा। ब्रह्मा जी ने संपूर्ण वृत्तांत विनम्रतापूर्वक निवेदित किया। करुणासागर शिव ने बिना विलंब किए दोनों देवताओं को अपने उदर में समाहित कर लिया और उन्हें पूर्ण सुरक्षा प्रदान की। कुछ काल पश्चात जब ब्रह्मा जी और विष्णु जी पुनः बाहर आए, तो देखा कि उन

दोनों भयंकर दैत्यों, हारव और कालकेलि, का शिव की अनंत शक्ति द्वारा पूर्णतः भस्मीकरण हो चुका था।इस दिव्य लीला से अभिभूत होकर ब्रह्मा जी और विष्णु जी ने भगवान शिव से एक विशेष वरदान की याचना की कि जो भी मनुष्य इस शिवलिंग का श्रद्धापूर्वक दर्शन करे, उसे भय से सदा के लिए मुक्ति प्राप्त हो। महादेव ने इस प्रार्थना को स्वीकार किया, और तभी से यह शिवलिंग 'अभयेश्वर महादेव' के नाम से संसार में विख्यात हुआ।

धार्मिक मान्यता है कि अभयेश्वर महादेव का दर्शन-पूजन करने वाले भक्त को जीवन में धन, संतान और परिवार के वियोग की पीड़ा नहीं सहनी पड़ती। ऐसा साधक सांसारिक सुखों का सम्यक भोग करते हुए, अंतकाल में परमगति को प्राप्त होता है, अर्थात उसकी आत्मा को मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

84 महादेव श्रृंखला की इस कड़ी में अभयेश्वर महादेव की कथा हमें एक गहन जीवन-सत्य का बोध कराती है। जब सृष्टि के महानतम शक्तिपुंज ब्रह्मा जी और विष्णु जी स्वयं भय के क्षणों में महादेव की शरण में गए, तो साधारण मनुष्य के लिए भी यह संदेश स्पष्ट है कि जीवन के प्रत्येक संकट, प्रत्येक भय और प्रत्येक अनिश्चितता का समाधान केवल शिव-शरणागति में ही निहित है। भय चाहे विनाश का हो, अस्तित्व का हो, या भविष्य की अनिश्चितता का, अभयेश्वर महादेव की आराधना मनुष्य को उस निर्भयता की अवस्था तक ले जाती है, जहाँ आत्मा भौतिक भय के बंधनों से ऊपर उठकर परम शांति का अनुभव करती है।

उज्जैन के महाकाल वन में स्थित यह पावन शिवलिंग आज भी भक्तों को यही संदेश देता प्रतीत होता है। जिस प्रकार संकट की घड़ी में स्वयं ब्रह्मा जी और विष्णु जी ने शिव की शरण ली, उसी प्रकार प्रत्येक मनुष्य को भी अपने जीवन के संघर्षों में महादेव की भक्ति में आश्रय खोजना चाहिए। यही अभयेश्वर महादेव की गाथा का शाश्वत संदेश है, और यही कारण है कि सदियों बीत जाने के बाद भी श्रद्धालु दूर-दूर से इस दिव्य स्थल पर आकर अभय और मोक्ष की कामना लेकर शीश झुकाते हैं। **यात्रा निरंतर जारी....**